॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! मेरा जो क्रियात्मक जीवन है मैं उसे सदैव चाहता रहता हूँ कि मेरा जीवन इस संसार में कर्मठता को प्राप्त होता रहे। क्योंकि कर्मठता ही तो जीवन है अकर्मण्यता ही मृत्यु हैं, जिसे हमें जानना है हम सदैव अपने जीवन में विचार-विनिमय करते रहते हैं। हे भगवन्! तू वास्तव में विचारकों का भी विचारक है सदैव अखण्ड रहने वाला है तेरा संसार में कोई विभाजन भी नहीं कर पाता, तू इतना महान है और विभु माना गया है जो सर्वत्र ओत-प्रोत है। मैं आपके चरणों की वन्दना करने आ रहा हूँ, प्रभु! यह जो अन्तरिक्ष है यह आपका मस्तिष्क ही है, प्रभु! ये जो दिशाएँ हैं यही तो आपकी भुजाएँ हैं यह पृथ्वी ही तो आपके तालू का कार्य कर रही है, भगवन्! आप जो पृथ्वी पर विचरने वाले नदीवत हैं यह आपके नाना स्त्रोत हैं, आपके शरीर के स्त्रोत हैं पर्वत अस्थियों का कार्य करते रहते हैं। भगवन्! यह जो सारा जगत है यह एक ब्रह्म के स्वरूप में मुझे दृष्टिपात आ रहा है।

प्रभु! यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है यह क्या है? इसको मैं जान नहीं पाता, जहाँ केवल अपने ही मानववत को नष्ट किया जाता हो। प्रभु! मुझे यह जगत सुन्दर प्रतीत नहीं होता, मुझे तो केवल एक ब्रह्म ही प्रतीत होता है जिसका यह विराट ब्रह्माण्ड एक शरीरवत् प्रतीत होता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 529 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 604
वर्ष : 45 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. आत्म-ज्योति	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-18
4. आदान-प्रदान	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि जी	19-34
5. ऋषियों के उद्‌गार		35
6. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		36-42

ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्रांगण में दिनाँक 9 दिसम्बर 2016 से 11 दिसम्बर 2016 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

आत्म-ज्योति

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वह मेरा देव विज्ञानमय माना गया है। जितना भी ज्ञान और विज्ञान इस सँसार में दृष्टिपात आ रहा है, यह उस महान् मेरे प्यारे प्रभु की महत्ता है अथवा उसकी प्रतिभा है।

परन्तु आजका हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा था और उन प्रेरणाओं में से ''अभ्यम् गतिः वृण्श्यतम् देवम् अदितिः ऋषि। ब्रह्म ब्राह्मणाः कृतम् देवाः।'' वेद में इस प्रकार के नाना मन्त्र आते हैं। हमारे यहाँ नाना दार्शनिकों का जब समूह विद्यमान होता है तो नाना प्रकार का विचार-विनिमय भी होता रहता है क्योंकि इस सँसार के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की विचार धाराएँ मानव के मस्तिष्कों में होती रहती हैं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! राजा जनक के यहाँ ब्रह्मयाग होता रहता था। यहाँ नाना प्रकार के यागों का वर्णन वैदिक साहित्य में आता रहता है। जैसे ब्रह्म-याग है, गो-मेध याग है, अश्वमेघ-याग है, वाजपेय-याग है, अग्निष्टोम याग है और भी नाना प्रकार के यागों का चयन अथवा वर्णन वैदिक साहित्य में आता रहता है। आज मैं यागों का प्रकरण अथवा उसकी आभा का वर्णन करने नहीं आया हूँ।

राजा जनक और उनकी पत्नी का चिन्तन

आज मैं तुम्हें कुछ परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या? आज मैं तुम्हें पुत्रो! त्रेताकाल में ले जाना चाहता हूँ। आज मैं उस काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ब्रह्मवेत्ताओं का समूह विद्यमान था और वहाँ ब्रह्म की विवेचना होती रहती थी और इस महान् जगत् के ऊपर नाना प्रकार की टिप्पणियाँ प्रारम्भ रहती थीं। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में राजा जनक और उनकी पत्नी अपने यहाँ देव-पूजा करते रहे हैं। एक समय मध्यरात्रि में दोनों विद्यमान हैं और राजा जनक की पत्नी के एक वेद-मन्त्र स्मरण आया और वह वेद-मन्त्र कह रहा था ''हिरण्यम् ब्रह्मणो कृतम् बृहिः वृतम् चक्षुः ज्योतिः जिव्याहम् हिरण्यम् ब्रहेः प्रभाः।'' वेद के विचारकों के समीप ये वेदमन्त्र आता रहता है। अब जब ये राजा जनक की पत्नी के समीप आया, तो वे मध्य रात्रि में चिन्तन करने लगीं। उसने अपने देव से कहा, पति राजा जनक से कहा कि महाराज! यह वेदमन्त्र क्या कह रहा है? यह वेदमन्त्र यह कह रहा है कि हमारे जो नेत्र हैं, हमारे जो चक्षु हैं वे किसके प्रकाश से प्रकाशमान हो रहे हैं। मेरे प्यारे! राजा जनक और उनकी पत्नी बेटा! दोनों विचार-विनिमय करते थे। मध्यरात्रि से प्रातःकाल हो गया, वे अपने में इसका कोई निपटारा नहीं कर सके।

जब नहीं कर सके तो तो दोनों अपने आसन को त्याग करके, अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके जहाँ वे योग करते थे, प्रातःकालीन देव-पूजा करते थे वे देव-पूजा स्थली में जा पहुँचे और वे याग करने को जब विद्यमान हो गए, तो मेरे पुत्रो! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जो राजा जनक के महान् आचार्य थे और गुरुजन थे, मेरे प्यारे! चाक्राणी गार्गी और वे महाराजा के पुरोहित और भी नाना ब्रह्मवेत्ता जैसे महात्मा दिग्गः, महर्षि प्रह्वाण, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेवक, महर्षि क्रेतकेतु और भी नाना ऋषि बेटा! वहाँ विद्यमान थे। अब मुनिवरो!

देखो यजमान ने यह कहा कि आज मैं कोई भी प्रश्न आचार्य से नहीं कर पाऊँगा। मेरे प्यारे! देखो, वे याग करने लगे। जब अग्नि होत्र किया तो दोनों उपासना करने के पश्चात् राजा और उनकी पत्नी मौन हो गए, शान्त हो गए।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और राजा जनक का सम्वाद

सूर्य का प्रकाश

राजा जनक को शान्त दृष्टिपात करके महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले, हे राजन्! हे यजमान! आज तुम मेरे से कोई प्रश्न कर सकते हो। वे दोनों अत्यन्त प्रसन्न हो करके बोले, कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे जो नेत्र हैं वे किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? कौन इनका प्रकाशक है? कौन प्रकाश दे रहा है? तो मुनिवरो! जब उन्होंने ऐसा कहा तो राजा जनक के वाक्यों को पान करके ऋषि बोले, हे राजन्! इसको प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक मेरी पुत्री जानती है, प्रत्येक बालक जानता है कि हमारे जो नेत्र हैं वे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। **सूर्य हमारा अदिति कहलाता है, वह चक्षुओं का मित्र कहलाता है** और मानव उसी के प्रकाश से प्रकाशमान होता है। प्रातःकाल जब सूर्य उदय हो जाता है तो उसी के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है और वह प्रकाश देने लगता है। वह संसार का व्यापार, संसार का कार्य प्रारम्भ कर देता है। यह सूर्य अदिति कहलाता है, यह अदिति है, लोक-लोकान्तरों को तपाने वाला है। नाना पृथ्वियाँ इसके आंगन में तपती हैं। यह सूर्य जब प्रातःकाल में उदय होता है तो यह प्रकाश देता रहता है। इसी के प्रकाश से यह संसार प्रकाशमान होता रहता है। तो हे राजन्! देखो मानव को यह प्रकाश देता है। माता के गर्भस्थल में भी यह सूर्य ही प्रकाशक बना हुआ है और प्रकाश देता रहता है।

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि जैसे 'गौ' नाम का पशु है, 'गौ' नाम के पशु के रीढ़ के विभाग में एक **'सूर्यकेतु'** नाम की नाड़ी होती है, उसका ऊर्ध्व मुख होता है और जब सूर्य उदय होता है, सूर्य की किरणें आती हैं तो उन किरणों को वह नाड़ी अपने में आकर्षित कर लेती है। तो मेरे प्यारे देखो! जो स्वर्ण की मात्रा इसमें विशेष होती है, वह जो 'स्वर्णकेतु' नाम की नाड़ी है वह उसी को अपने में ग्रहण कर लेती है, उन परमाणुओं को अपने में सींच लेती है और वह जो 'गौ' नाम के पशु में नाना प्रकार के यन्त्रालय विद्यमान हैं उन यन्त्रालयों में वह परमाणु जाते हैं। गौ के दुग्ध घृत में मानो पीतवर्ण कहलाता है, पीतवर्ण इसीलिए होता है, क्योंकि उसमें स्वर्ण मात्रा विशेष होती है। हमारे आचार्यों ने, ऋषि-मुनियों ने 'गौ' नाम के पशु को बेटा! **आग्नेय-पशु** माना है, इसका सम्बन्ध सूर्य से विशेष रहता है।

विचार-विनिमय क्या? यह नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपाने वाला है, इस पृथ्वी, माता-वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार के खनिज को देने वाला है, खाद्य को प्रदान करने वाला है। मेरे प्यारे! पृथ्वी के गर्भस्थल में कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, कही पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की धातु का निर्माण हो रहा है, कहीं स्वर्ण का पिपाद बनाया जा रहा है। ये सब सूर्य की प्रतिभा है। यह महान् सूर्य जो तप रहा है, चक्षुओं का मित्र बना हुआ है यह उसी की प्रतिभा कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा, हे राजन्! ऐसा जो सूर्य है, जो प्रातःकाल होते ही माता अपने पुत्रों को जागरूक कर देती है, कहती है, ''हे बालक! जागरूक हो जाओ सूर्य उदय हो गया है।'' मेरे प्यारे! ऐसा जो सूर्य है उसकी प्रतिभा, उसकी ऊषा आते ही पक्षीगण भी अपनी आभा का गुणगान गाने लगते हैं। ऐसा जो अदिति है, ऐसा जो सूर्य है मेरे प्यारे! वह इन चक्षुओं का मित्र कहलाता है।

चन्द्रमा का प्रकाश

राजा ने कहा, हे ऋषिवर! इसकी मीमांसा मैं विशेष नहीं चाहता हूँ, मेरी इच्छा यह है, मैं यह जानना चाहता हूँ, जब सूर्य नहीं होता तो हमारे नेत्रों का देवता कौन है? प्रभु! क्योंकि सूर्य तो अस्ताचल को चला जाता है उसके उपरान्त किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? मेरे प्यारे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मवेत्ता ने कहा, हे राजन्! जब यह सूर्य नहीं होता तो चन्द्रमा से प्रकाशमान होते हैं। **यह चन्द्रमा हमारे नेत्रों का देवता है,** यह चन्द्रमा अमृत को बिखेरने वाला है, यह चन्द्रमा हमारा देवता है। ''आभ्याम् गतम् ब्रह्म लोकाम् अमृताम् देवम् ब्रह्म लोकाः।'' जब माता के गर्भस्थल में शिशु होता है, माता के गर्भस्थल में रसना के निचले विभाग में एक **'चन्द्रकेतु'** नाम की नाड़ी होती है, उस नाड़ी का सम्बन्ध माता की 'पुरीतत' नाम की नाड़ी से होता है और पुरीतत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है और माता की लोरियों से पंचम नाड़ी बन करके चलती हैं और अमृत बहाने वाला चन्द्रमा है। बेटा! देखो, माता की नाभि से बालक का इन नाड़ियों से सम्बन्ध होता है, तो वहाँ अमृत प्रदान किया जाता है, वह कौन बना रहा है बेटा! वह कौन अमृत दे रहा है? मेरे प्यारे! वह चन्द्रमा है वह 'सोम' कहलाता है वह आभा में रमण करने वाला है। मुनिवरो! देखो, वह चन्द्रमा जो कान्ति बन करके 'रेणुका' को 'रेणुका' बना देता है। हमारे यहाँ मुनिवरो! देखो, रात्रि को प्रकाश में लाने वाला चन्द्रमा है। अमृत को बहा देता है नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उसी से रसों का स्वादन लेती रहती हैं और नाना प्रकार का जो यह सोम चन्द्रमा, चन्द्रमा सोमरस बन करके समुद्रों को तपाता रहता है। समुद्रों से नाना प्रकार का जो 'सोम' उत्पन्न होता है उससे मेघ और मेघों से सुन्दर-सुन्दर वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। आओ मेरे प्यारे! देखो यह चन्द्रमा! हमारे नेत्रों का देवता है, **यह चन्द्रमा ही,**

अहा! अमृत को बहाने वाला है। एक नहीं प्रभु के राष्ट्र में नाना चन्द्रमा हैं। एक 'आकाश गङ्गा' में नाना चन्द्रमा हैं परन्तु वे चन्द्रमा रात्रि के प्रकाश में 'अमृत' को बहा देते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो! राजा पुनः मौन हो गए।

तारा मण्डलों का प्रकाश

राजा ने नतमस्तक हो करके कहा, प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ जब ये चन्द्रमा नहीं होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा, हे राजन्! जब ये चन्द्रमा नहीं होता तो हम नाना तारामण्डलों के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आता रहता है उसी के प्रकाश से मानो पगडण्डियाँ प्राप्त कर लेता है। ये नाना प्रकार की आभा में, उज्ज्वलता में प्रगट होने वाले ये नाना तारामण्डल कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, एक कैसी प्रिय माला बन रही है, उस माला को जो धारण कर लेता है, वह प्रियता को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! ऋषि कहता है, राजन्! ये जो नाना प्रकार के तारामण्डल हैं इनकी एक माला बनी हुई है। वह माला ही आभा में रमण करने वाली है। उन्होंने वर्णन करते हुए कहा कि तारामण्डल एक नहीं, एक से एक विशाल कहलाते हैं। हे राजन्! तुम्हें यह प्रतीत है कि नाना पृथ्वियाँ 'सूर्य-मण्डल' में समाहित हो जाती हैं। यह जो सूर्य है, आरूणि मण्डल में ऐसे सहस्त्रों सूर्य समाहित हो जाते हैं। सहस्त्रों 'आरुणि' इस आभा में 'आभ्याम् गति' में 'ध्रुव' में समाहित हो जाते हैं। हे राजन्! तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए, जैसा यह ध्रुव है ऐसे-ऐसे सहस्त्र ध्रुव 'जेठाय नक्षत्र' में समाहित हो जाते हैं। जैसा जेठाय नक्षत्र है ऐसे-ऐसे एक सहस्त्र 'जेठाय नक्षत्र' देखो, 'अरुन्धति मण्डल' में ओत-प्रोत हो जाते हैं। जैसा 'अरून्धति मण्डल' है ऐसे-ऐसे एक सहस्त्र 'अरुन्धति पुष्य नक्षत्र' में ओत-प्रोत हो जाते हैं। जैसा 'पुष्य नक्षत्र' है ऐसे-ऐसे एक सहस्र 'पुष्य नक्षत्र' 'स्वाति

नक्षत्र' में ओत-प्रोत हो जाते हैं। जैसा 'स्वाति नक्षत्र' है ऐसे-ऐसे एक सहस्र 'स्वाति' 'अचंग' लोकों में ओत-प्रोत हो जाते हैं। जैसा 'अचंग' है वे 'ब्रह्मी' लोकों में ओत-प्रोत हो जाते हैं। बेटा! आज मैं प्रभु की प्रतिभा का वर्णन करने नहीं आया हूँ। प्रभु का विज्ञान इतना अनन्त है, इतना महान् है कि उसको मेरे प्यारे! कोई सीमा में वर्णन भी नहीं कर पाता। आज मैं तुम्हें वर्णन कराने आया हूँ कि ये नाना प्रकार के तारा मण्डलों का प्रकाश इस पृथ्वी मण्डल पर आता रहता है। इसी की आभा में मुनिवरो! देखो, प्रकाशमान हो जाता है उन्हीं का प्रकाश **मानव के नेत्रों का देवता यही तारा मण्डल बन जाता है।** नाना 'सौर-मण्डल' कहलाते हैं। एक 'आकाश-गङ्गा' में नाना 'सौर-मण्डलों की गणना की गई तो ऋषिवर क्या, वैज्ञानिकजन मेरे प्यारे! एक आकाश-गङ्गा के चन्द्रमा और सूर्यों की गणना भी पूर्ण रूप में नहीं कर पाये अब तक।

अग्नि का प्रकाश

आओ मेरे पुत्रो! आज मैं सौर-मण्डल में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रभु का विज्ञान कितना अनन्त है। ऐसा मुझे स्मरण आता रहता है कि राजा जनक ने जब ये सौर-मण्डलों की चर्चाएँ, लोकों की चर्चाएँ सुनी तो उस समय राजा जनक नतमस्तक हो करके बोले, प्रभु! मैं यह नहीं जानना चाहता हूँ। जब यह सौर-मण्डल अथवा ये तारा मण्डल नहीं होते जब हमारे नेत्र किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा, हे राजन्! जब ये तारा मण्डल नहीं होते तो हम अग्नि के प्रकाश से ही प्रकाशमान हो जाते हैं, **यह अग्नि हमारे नेत्रों का देवता है।** अग्नि आभामय कहलाता है, यह अग्नि एक ही प्रकार की नहीं है। कहीं अग्नि वैश्वानर अग्नि बन करके प्रकाश दे रही है, कहीं अदिति बन करके प्रकाश दे रही है, कहीं द्यौ सूर्य बन करके प्रकाश दे रही है, कहीं दक्षिणाय अग्नि

कहलाती है, कहीं गृहपत्य नाम की अग्नि कहलाती है, कहीं गार्हपत्य कहलाती है। ये नाना प्रकार की अग्नियाँ प्रकाश दे रही हैं और प्रकाश दे करके वेद के ऋषियों ने, आयुर्वेदाचार्य ने तो अश्विनी कुमार जैसे **आयुर्वेदाचार्यों ने 85 प्रकार की अग्नि मानी है।** परन्तु जब विज्ञान के युग में प्रवेश करते हैं, विज्ञान में से एक-एक अग्नि में से जो तरङ्गें उत्पन्न होती हैं वे मेरे प्यारे! सहस्रों, अरबों-खरबों तरङ्गें हैं जो गणना में नहीं आतीं। मेरे पुत्रो! देखो, अरबों-खरबों तरङ्गों वाली यह अग्नि है जो मेरी प्यारी माता, अन्धकार छाया हुआ है गृह को प्रकाशित करती है, वह गृह में इसी अग्नि से प्रकाश को प्राप्त कर अपना व्यापार प्रारम्भ कर लेती है। वह नेत्रों की अग्नि बन करके वे **चक्षु-मित्र अग्नि** कहलाती है।

मेरे प्यारे! वह अग्नि ही मानव जीवन का क्या वह अग्नि ही इस संसार में लौकिक अग्नि बन करके प्रकाश देती है और वही अग्नि मेरे प्यारे! द्यौ सूर्य बन करके सूक्ष्म बन जाती है। वही अग्नि वाणी बन करके मानव को अग्रणीय बना देती है। मेरे प्यारे! देखो अग्नि के भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप माने गए हैं। जब ऋषि ने राजा के समीप अग्नि की भिन्न-भिन्न प्रकार की मीमाँसाएँ कीं तो मेरे प्यारे! देखो, 'अग्रणम् देवाः अग्निश्चतम् देवोः।

वाणी का प्रकाश

उस समय उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ जब ये अग्नि भी नहीं होती तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा, हे राजन्! जब ये अग्नि नहीं होती, उस समय हम इस 'वाक्य' के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये 'वाक्यमयी' जो ज्योति है यह विशाल-ज्योति कहलाती है। एक मानव अन्धकार में चला जा रहा है, मार्ग में चला जा रहा है। मार्ग से कुमार्ग को चल देता है।

जब यह कुमार्ग के अन्धकार में चला जाता है भयङ्कर वन में, उस समय वह कहता है, ''अरे! हे कोई हमें चेताने वाला? उस समय मार्ग में जो मानव स्थिर है वो कह रहा है, आ जाओ। मैं मार्ग में स्थिर हूँ।'' तो मुनिवरो! देखो, वह उस वाणी के प्रकाश से उसी मार्ग का पथिक बन जाता है जिस मार्ग से वह मानव विचलित हो गया है जिस मार्ग से, जिस पथ से वह कुपथ बन गया है। तो मेरे प्यारे! वह वाणी का प्रकाश है। एक मानव को अज्ञान छा गया है वाणी से एक मानव उसको शिक्षार्थी बन करके शिक्षा दे रहा है। यह वाणी का प्रकाश है, वह उस हृदय के, हृदय रूपी अन्धकार को त्याग करके प्रकाश के मार्ग पर चला जाता है, वह अपने पथ को प्राप्त कर लेता है। मेरे पुत्रो! जब उन्होंने ऐसा वर्णन किया कि 'वाङ्मय-ज्योति' देखो, ब्राह्मण वाणी से कहलाता है, यह ब्राह्मण वाक्य पवित्र होता है। यह वाक्य ही है मेरे प्यारे! **जितना दार्शनिक शब्द होता है, वाक्य होता है, वही मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में विद्यमान होता है।**

मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! देखो **उद्दालक गोत्र में वृण-केतु ऋषि महाराज एक समय याग कर रहे थे** और जब वे याग कर रहे थे, याग के सूक्ष्म परमाणुओं को वो एकत्रित करते हुए, उनसे यन्त्रों का निर्माण कर रहे थे। उन्होंने एक ऐसे यन्त्र का निर्माण किया जिस यन्त्र में उनका चित्र उन्हें दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने आगे अनुसन्धान किया तो आगे आने वाले उन्हें कुछ चित्रों के दर्शन होने लगे उसी यन्त्र में और यन्त्र का विकास किया **''चित्रावली व्रणकेतु''** यन्त्र था। उनके शब्द अन्तरिक्ष में विद्यमान रहते हैं क्योंकि शब्द सदैव नित्य रहने वाला है। अन्तरिक्ष में वह गति करता रहता है और अन्य शब्दों के साथ मे गति करता है। तो अपने सौवें महापिता के दर्शन होने लगे। प्यारे! आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले जाना नहीं चाहता हूँ। वाक्य यह प्रगट कर रहा था कि 'वाक्य' के प्रकाश से मानव

प्रकाशित होता है। वाक्य से मानव अन्धकार से अन्धकार को त्याग करके प्रकाश में चला जाता है। मेरे पुत्रो! जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वाक्य की बहुत मीमाँसा की। मीमाँसा करने के पश्चात् मेरे पुत्रो! देखो, उसके पश्चात् ऋषि कहता है। ''वृह्मणम् ब्रह्मणाः कृतम् लोकाम् हिरण्यमृथा दिव्यम् लोकाः।''

आत्मा का प्रकाश

उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ जब ये वाक्य भी नहीं होता तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा, हे राजन्! जब वाक्य नहीं होता तब हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? यह तुम जानना चाहते हो। जब यह सूर्य भी नहीं होता, चन्द्रमा भी नहीं होता, तारामण्डल भी नहीं होते, अग्नियाँ भी नहीं होतीं और वाक्य भी नहीं होता, तो हे राजन्! हम इस आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह आत्मा हमारे शरीर में गति करता रहता है। यह आत्मा प्रकाश का देने वाला है। 'आत्म-त्तत्व' जब तक इस मानव शरीर में रहता है तब तक मानव गति करता रहता है, वो गतिशीलता है। जब यह आत्मा शरीर से निकल जाता है उस समय यह मानव का शरीर 'शव' रह जाता है। हे राजन्! जब मानो, देखो शव रह जाता है। यह मानव का शव है नेत्रों के गोलक में भी नेत्र ज्यों के त्यों बने हुए है, परन्तु सूर्य प्रकाश दे रहा है। अरे! मानव क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते? चन्द्रमा अपनी 'सोम' वृष्टि कर रहा है, रसना ज्यों की त्यों बनी हुई है। इस मानव शव में नेत्र भी ज्यों के त्यों हैं। अरे मानव! क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते? तारा मण्डलों की माला उसी प्रकार निर्मित हो रही है, प्रभु का विज्ञान उसके साथ-साथ है। परन्तु देखो! एक आत्मा नहीं है इस मानव शरीर में। अरे मानव! क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते? बेटा! वाक्य भी है, अग्नि भी है परन्तु क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते? इसीलिए बेटा! **वेद के ऋषि ने, आचार्यों ने,**

दार्शनिकों नें कहा है कि हमारे जो नेत्र हैं वे आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं।

इसीलिए हे मानव! तुम इस आत्मा को जानने का प्रयास करो क्योंकि सँसार में जैसे प्रातःकाल से लेकर सायँकाल तक तुम उदर की पूर्ति का प्रयास करते रहते हो, उदर की पूर्ति करने का प्रयास, उसे भरण करने का। अरे मानव! इस आत्मा को भी तो भोजन देने का प्रयास करो, आत्मा को भी तो भोजन दो! आत्मा का भोजन क्या है? बेटा! सत्सँग है, आत्मा का भोजन क्या है? प्रभु का चिन्तन करना है। आओ मेरे प्यारे! हम इस आत्मा को जानने का प्रयास करें। अरे! न यह आत्मा जागृत है, न स्वप्न है, न सुषुप्ति है। अरे! यह आत्मा है क्या बेटा? आज विचारा जाता है, विचारने से प्रतीत होता है–यह आत्मा न जागरुक, **जब ये मानव जागरुक रहता है तब आत्मा का प्रकाश मानव के नेत्रों के समीप रहता है।** नेत्रों से विभाजन करता रहता है। एक मानव अहा! देखो, अपने कुटुम्ब का परिचय देता है– ये मेरी माता है, ये पिता है, यह पुत्री है, यह पुत्र है, यह पौत्र है, यह प्रपौत्र है, कुटुम्ब का परिचय दे रहा है। अरे! वो कहाँ से दे रहा है? आत्मा का प्रकाश मन के ऊपर प्रतिभा और मन का सम्बन्ध नेत्रों से है। विभक्त करने वाला यह 'मनस्तत्त्व' माना गया है परन्तु प्रकाश आत्मा का आ रहा है।

मन, प्राण और आत्मा

मेरे प्यारे! देखो जब यह जागरूक क्या स्वप्न में चला जाता है, अरे इस मानव के शरीर में राष्ट्र नहीं होते, स्वप्न में राष्ट्रों का निर्माण हो जाता है। परन्तु पत्नियाँ नहीं होतीं, पत्नियों का निर्माण हो जाता है, पति नहीं होते पतियों का निर्माण हो जाता है, नद-नदियाँ नहीं होते, समुद्र नहीं होता, परन्तु इन सबका निर्माण हो जाता है। वह निर्माण

करने वाला कौन है? स्वप्न में, बेटा! यह मन देखो चित्त में जो नाना प्रकार से सूक्ष्म अकुँर विद्यमान होते है और वे करोड़ो-करोड़ो जन्मों के होते हैं, करोड़ों जन्मों के जो सँस्कार चित्त में विद्यमान होते हैं, मन के समीप होते हैं। मेरे प्यारे! आत्मा प्रतिभा, आत्मा के प्रकाश से यह मन उन सूक्ष्म अँकुरों को साकार रूप में दर्शन करता हुआ यह भोक्ता बन जाता है यह भोगता रहता है। मानव, नदी, नदियाँ शरीर में नहीं होते परन्तु उनका निर्माण कर लेता है, यह मन ही तो निर्माण करता है आत्मा के प्रकाश में। बेटा! यह आत्मा देखो यह सुषुप्ति भी नहीं है। सुषुप्ति किसे कहते हैं? मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार मेरे प्यारे! अपनी साम्य अवस्था में चले जाते हैं उस समय बेटा! आत्मा 'प्रणामं उब्रहे देवतम् लोकाः' यह प्राण के साथ में आत्मा गति करने लगता है और यह मन अपने कुटुम्ब को ले करके यह सुषुप्ति में चला जाता है। बेटा! उस समय मन ऐसा मान लेता है, आज मैं ऐसा आनन्दवत् हो गया कि मुझे संसार का ज्ञान नहीं रहा। बेटा! उसे सुषुप्ति कहते हैं—मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार अपनी साम्यावस्था में जाने का नाम सुषुप्ति कहलाता है। उस समय कौन जागता रहता है? प्राण और प्राण के साथ में आत्मा का तारतम्य प्रत्येक श्वास के साथ में बेटा! 'आत्म-तत्त्व' विराजमान है। मेरे प्यारे! प्रति श्वास 'प्राणस्वम् ब्रहेः' प्राण की ध्वनि हो रही है बेटा! यह आत्मा न जागरूक है, न स्वप्न है, न सुषुप्ति है। यह आत्मा तो बेटा! **तुरीयावस्था** में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की अवस्था मानी जाती है। उन अवस्थाओं में मेरे प्यारे! देखो, योगेश्वर वैखरी वाणी भी प्रगट करने लगता है। आज मैं तुरीयावस्था का वर्णन करने नहीं आया हूँ।

विचार यह देने के लिए आया हूँ कि आत्मा बेटा! एक रस रहने वाला चेतन है जो शरीर में भास रहा है अथवा गति कर रहा है। जिस आत्मा के रहने से यह मानव शरीर कहलाता है, चेतनित कहलाता है,

आत्मा से निकल जाने से मेरे प्यारे! देखो यह मानव का शरीर शव रह जाता है।

आओ मेरे प्यारे! जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ सब मीमाँसा राजा के समीप की तो राजा और उनकी पत्नि प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! आपने हमारे ज्ञान के चक्षु आभा में परणित कर दिए हैं। आज हमें यह ज्ञान हुआ है कि वास्तव में आत्मा क्या है? हम आत्मा के प्रकाश से हीं प्रकाशमान होते हैं मानव के, नेत्रों के प्रकाश का जो मूल है उस मूल में आत्मा है और आत्मा के घेरे में बेटा! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड कहलाता है। आओ मेरे प्यारे! देखो, आज हम जब आत्मा के प्रसंग से मध्यम ले लेते हैं तो यह भौतिकवाद आता है और भौतिकवाद 'वाक्-ज्योति' से समाप्त हो करके, शब्द नित्य से समाप्त हो करके, बेटा! वहाँ से आत्मा का विज्ञान प्रारम्भ होता है। आत्मा के विज्ञान में जब मानव प्रवेश करता है तो धन्य हो जाता है, वह मृत्यु से पार हो जाता है। आओ मेरे प्यारे! देखो उसे सँसार का भय नहीं होता, वह इससे रहित हो जाता है।

आत्म तत्त्व को जानने की प्रेरणा

मेरे पुत्रो! देखो, राजा जनक को ऋषि ने ये मीमाँसा प्रकट की। महत्ता प्रकट करने के पश्चात् ऋषिवर मौन हो गए। जब ऋषि मौन हो गए तब 'अव्रतम् देवाः' राजा ने कहा प्रभु! धन्य है। आपने मेरे ज्ञान चक्षुओं को गुणित कर दिया है, मुझे जागरूक कर दिया है, मैं अज्ञान में था, अन्धकार में था। वेद प्रकाश में लाने का आपने मुझे प्रयास किया है। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है कि हमारे जो नेत्र हैं वे किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। हमें इस आत्मा को जानना चाहिए क्योंकि आत्मतत्त्व ही एक ऐसा है जो मानव को अज्ञान से दूर कर सकता है। अन्यथा भौतिकवाद के नाना

प्रकार के पद्रार्थों में नाना प्रकार के अणु, महाअणु, त्रसरेणुओं में रमण करता रहता है। प्रकृति के तत्त्वों को जानना है उनसे उपस्थित हो जाता है। एक तरँग को जाना दूसरी तरँगे उपस्थित हो जाती है, एक परमाणु जाना द्वितीय परमाणु उपस्थित है। यन्त्र का निर्माण किया, दूसरे यन्त्र की इच्छा बनी रहती है। परन्तु देखो केवल विज्ञान के ज्ञान से बेटा! वैज्ञानिक समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकृति आभा को वे नहीं जान पाते क्योंकि प्रकृति के गर्भ के मूल में चेतना है और वह चेतना प्रभु है। इसीलिए बेटा! देखो प्रभु और आत्म-तत्त्व को जानने से सर्वत्र जाना जाता है और इनके न जानने से कुछ नहीं जाना जाता।

यह है बेटा! आज का वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा मैं बेटा! शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। आजका वाक्य हमारा अब समाप्त होने जा रहा है। **आजका वाक्य हमारा यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपनी आत्मा को जानते हुए इस सँसार-सागर से पार हो जाएँ।** यह है बेटा! आजका वाक्य। आज के वाक्य अब हमारे समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

आनन्द मंगलम्

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 15 जुलाई, 1979
स्थान : श्री महेन्द्रसिंह भाटी व
श्री हीरासिंह
ग्राम घंघौला, बुलन्दशहर

॥ ओ३म् ॥

आदान-प्रदान

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन मनोहर वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वह परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माने गए हैं। जितना भी संसार का शुभ कर्म है, आत्मीय कर्म है, चाहे वह भौतिक विज्ञान में ले जाने वाला हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान में ले जाने वाला हो, भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश होने का नाम भी एक प्रकार का याग ही माना है। जितना यह संसार हमें प्रपञ्चरूपों में दृष्टिपात आ रहा है उसके मूल में यह भौतिकवाद है अथवा भौतिक विज्ञान है और वह कितना सूक्ष्म है? वैज्ञानिकजन तो उसकी सीमा को जान ही नहीं पाते वह इतना सूक्ष्म है। परन्तु जब आध्यात्मिक विज्ञान में भौतिकवाद के मार्ग से ही हो करके प्रवेश करते हैं तो वहाँ ऋषि-मुनियों की कुछ अनुभूतियाँ होती हैं। प्राण में गति करने वाला यह जो ब्रह्माण्ड है क्योंकि सर्वत्र जगत् एक प्राण का स्वरूप ही दृष्टिपात आ रहा है। प्राण है, गति के रूप में गति हो रही है, गतिवान् बन करके परमाणु का आदान और प्रदान करता रहता है। **आदान-प्रदान करने का नाम ही संसार है।**

महान् पूञ्जी

एक परमाणु है वह आदान-प्रदान में गति कर रहा है। वह सर्वत्र विज्ञान की एक पूञ्जी मानी गयी है। जो मानव यह जानना चाहता

है कि मैं विज्ञान और भौतिकवाद में प्रवेश होना चाहता हूँ तो आदान-प्रदान ही करना है, उसको जानना है। जैसे यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह परमाणुओं का आदान-प्रदान कर रहा है, वह जो आदान-प्रदान हो रहा है वह उसके जीवन की एक महान् पूञ्जी कहलाती है, उसके जीवन की एक धारा कहलाती है। उस आदान-प्रदान में द्रव्य भी आता है, संसार की प्रतिष्ठा भी आती है, संगतिकरण भी उसी में आ जाता है। उसमें सर्वत्र जीवन की आभा विद्यमान रहती है।

याग कर्म

आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा था कि यह जो हृदय है यह मानव की अग्निमय ज्योति कहलाई जाती है। उस ज्योति को जानने के लिए मानव को साधना और योगेश्वर बनने के लिए परिश्रम की आवश्यकता रहती है। आज मैं विशेष विवेचना नहीं करूँगा, क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी भी कुछ शब्दो की विवेचना करेंगे। आज का हमारा अभिप्राय केवल यह है कि जितना भी यह याग-कर्म है, यागों की प्रतिभाषिता है वह प्रत्येक प्राणी के हृदय में किन्हीं न किन्हीं रूपों में विद्यमान रहती है। वह सुगन्धि का स्वरूप है। प्रत्येक मानव सुगन्धि में रहना चाहता है कोई प्राणी दुर्गन्ध में रहना नहीं चाहता वह सदैव सुगन्धि में रहना चाहता है। तो जितना भी यह याग कर्म है यह सब सुगन्धि मानी जाती है। जैसे याग के द्वारा अग्नि में मानव आहुति देता रहता है तो उसी आहुति का सूक्ष्म रूप बन करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाता है और अन्तरिक्ष में परमाणुओं के आदान-प्रदान की चर्चा आ गयी। मेरे पुत्रो! इसी प्रकार वही सुगन्ध को ले जाता हुआ जैसी अग्नि दूरिता को भस्म करती हुई शुद्धता को वायुमण्डल में परणित कर देती है इसी प्रकार मानव के जीवन में भी एक और सुगन्धि होती है जो इससे भी सूक्ष्म है उसका नाम है चरित्र रूपी अग्नि, चरित्र रूपी सुगन्धि।

चरित्र रूपी सुगन्धि

बेटा! ऋषि एक आसन पर विद्यमान है, तप कर रहा है, साधना कर रहा है, विद्या का अध्ययन कर रहा है, ब्रह्मवर्चोसि बन रहा है परन्तु किसी भी उच्चारण करने के लिए नहीं जाता कि मैं सुगन्धिमय याग कर रहा हूँ, वेद का अध्ययन कर रहा हूँ, विद्या का अध्ययन कर रहा हूँ। परन्तु उस मानव की धीमी-धीमी उसके चरित्र के क्रियाकलाप की जो सुगन्धि है वह मानव के समीप जानी स्वतः ही प्रारम्भ हो जाती है, क्योंकि प्रत्येक मानव के शरीरों में हृदय है और हृदय उन वाक्यों को छूने लगता है, वह जो तरंगें वायु में गति कर रही हैं वह मानव के हृदय में प्रवेश कर जाती हैं। और वह जो तप करने वाला ऋषि है उसके प्रति मानव के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। उसकी सुगन्धि जब समाज में पहुँची तो राष्ट्र में चली गई। राष्ट्र में उसके द्वारा उसके जीवन की सुगन्धि से उसके क्रियाकलाप रूपी सुगन्धि से राजा भी उसका सत्कार करने लगता है अथवा उसकी नाना प्रकार की शिक्षाओं से राजा अपने को सौभाग्यशाली स्वीकार करता है। उसके कथनानुसार राष्ट्र का नियम बना देता है। राष्ट्रीयता उसमें परणित हो जाती है। इस प्रकार उसकी सुगन्धि कहाँ से कहाँ चली गई। तो मुनिवरो! जैसे यह सुगन्धि, यज्ञ सुगन्धि है उसी प्रकार मानव के जीवन में एक और यज्ञ हो रहा है। वह यज्ञ है चरित्र का यज्ञ, साधना का यज्ञ। ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है। अध्ययन करता हुआ विज्ञान के बहुत से तन्तुओं को जानता है। वह विद्यालय में प्रियता को प्राप्त हो जाता है। विद्यालय में प्रियता उसे प्राप्त हो जाती है। वह विज्ञान की तरंगों को गणित करता हुआ उसमें सुगन्धित हो जाता है।

आध्यात्मिक सुगन्धि

ज्ञान और विज्ञान की भी एक सुगन्धि होती है। एक और याग हो रहा है पुत्रो! वह याग है आध्यात्मिक याग तारा-मण्डलों को गणित

करता हुआ ब्रह्मवर्चोसि बन करके ब्रह्म का और अपना मिलान करना चाहता है। ब्रह्म है यह निष्ठा हो जाती है और उसके पश्चात् वह अपने को उससे मिलान कराना चाहता है। वह साधना कर रहा है। एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके वह प्रभु से वार्ता कर रहा है और कह रहा है हे प्रभु! मैं तेरे समीप आना चाहता हूँ। तेरा यह ब्रह्माण्ड अनन्तवत् है। जैसे यह तेरा ब्रह्माण्ड अनन्त है, ऐसे ही मैं तेरी अनन्तमयी ज्योति में प्रवेश करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! वह मानव साधक बन करके प्रभु से मिलान करना चाहता है। इस सँसार में प्रत्येक परमाणु में प्रभु को दृष्टिपात करने लगता है। जब प्रभु को जनसमूह में दृष्टिपात कर लेता है उसका काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष जातीय नाना प्रकार के विकार मानव के हृदय में समाप्त हो जाते हैं और वह प्रभु की गोद में जाना चाहता है। वह आध्यात्मिक याग हो रहा है, आध्यात्मिक सुगन्धि आ रही है। आत्मा उससे बलिष्ठ हो रहा है। जहाँ जाता है उसका पूजन हो रहा है। समाज में जाता है, उसको पूज्य दृष्टि से समाज दृष्टिपात करने लगता है। प्रभु की आभा में रमण करता हुआ वह अपने को महान् और पवित्र बनाना चाहता है। तो आजका यह विचार अब मैं समाप्त कर रहा हूँ। मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्दों की विवेचना करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी कुछ अमृत बिखेर रहे थे। क्योंकि अमृत बिखेरना ही मानव का मौलिक सिद्धान्त कहलाता है। परम्परागतों से ही यह मौलिक सिद्धान्त है जिस आभा में मानव अपना वास करना चाहता है, उसी का वह सिद्धान्त बन जाता है। परन्तु जो ईश्वरीय और महान् सिद्धान्त हमारी जहाँ यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक यज्ञोषि पठन-पाठन का काम व्याप्तता में वह सम्पन्नता को गया। मेरा हृदय सदैव प्रसन्न

रहता है और जब यागों के कर्म, उनके क्रियाकलाप, उनका विज्ञान स्मरण आता है तो हृदय प्रायः और भी गद्गद् हो जाता है। मेरा अन्तर्हृदय यह कहता है जिन गृहों में यागों का चलन होता है वह गृह सदैव सौभाग्यशाली होते हैं। क्योंकि **द्रव्य का सदुपयोग होना ही द्रव्य की पूजा कहलाती है।** मैं, उन यजमान को जिसके यहाँ सुन्दर 'आप नाम् सुसज्जित प्रवहे' हे यजमान! तेरा सौभाग्य है, तेरे यहाँ द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है। द्रव्य का सदुपयोग होना ही द्रव्य की पूजा है। द्रव्य को देवताओं और यागों में परणित करने का नाम ही उसकी सदुपयोगियता है। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका बनी रहती है 'यागम् ब्रहे अस्तोः' कि याग में क्या है? हमारे यहाँ शुभ कर्मों का नाम तो याग माना ही है। परन्तु जब **यजमान अग्नि के समीप विद्यमान हो करके याग करता है तो प्रसन्नता और सम्पन्नता दोनों उसके हृदय में परणित रहती हैं।** परन्तु वह कहाँ प्रदान कर रहा है? यह उसे कोई प्रतीत नहीं होता।

वायु मण्डल की प्रतिभा

आज मैं इसके सूक्ष्म से विज्ञान की चर्चा करूँगा। यह जो नाना प्रकार के द्रव्य पदार्थ घृत इत्यादि साकल्य बना करके अग्नि में प्रवेश करते हैं अग्नि इनका विभाजन कर देती है। क्योंकि अग्नि में यह गुण होते हैं कि अग्नि प्रत्येक वस्तु का विभाजन कर देती है। यह अग्नि नाना प्रकार की है। यही अग्नि है जो यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यजमान के विचार, होताजनों के विचार, जन समूह के विचार अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके साकल्य के द्वारा उन शब्दों का और पदार्थों का सूक्ष्म परमाणु बन करके उनका विभाजन कर देते हैं और जब यह विभक्त कर देती है तो अन्तरिक्ष में, जैसे साकल्य में मधु होता है तो मधु का जैसे वैज्ञानिक यन्त्रों के द्वारा प्रत्येक वस्तु का मानव

रस ले करके उसको उपयोग में लाता है, इसी प्रकार यह जो यजमान यज्ञ कर रहा है, इसमें जो मधु होता है वह साकल्य बनता है। घृत होता है वह अन्तरिक्ष में छा जाता है। परमाणुओं में, अग्नि जब नव-शक्ति आती है वह अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो करके अशुद्ध परमाणुओं को निगलना प्रारम्भ कर देती है। जब अशुद्ध परमाणु निगलने लगता है, शुद्ध परमाणु छा जाते हैं क्योंकि **शब्दों से भी गृह ऊँचे बनते हैं और धर्म करने से भी ऊँचे बनते हैं।** जिस गृह में सत्यवादी पुरुष रहते हैं, जिस गृह में सदैव सत्य उच्चारण करने वाले हों सुसज्जित हों वह गृह सदैव महान् और पवित्र बने रहते हैं।

परन्तु मेरे पुज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में मुझे यह वर्णन कराया, जब विद्यालय में प्रवेश करते थे उस काल में चरणों में ओत-प्रोत करा करके शिक्षाओं को प्रदान करते रहते थे। इस विभक्त क्रिया से साकल्य, जिसे हम सामग्री कहते हैं, सामग्री का अर्थ है, सँग्रह किये हुए पदार्थ, सँग्रह की हुई नाना प्रकार की औषधियाँ, परन्तु इस अग्नि में धारण करने से सूक्ष्म बनाना ही वायुमण्डल की प्रतिभा को जन्म देना है। आधुनिक काल का यह जो समाज है, नाना प्रकार की रूढ़ियों में परणित हो रहा है। वह काल मुझे स्मरण है जब यह रूढ़ियाँ नहीं थीं इस सँसार में। इस पृथ्वी मण्डल पर रूढ़ियाँ नहीं थीं। मङ्गल मण्डल में रूढ़ियाँ नहीं थीं। जिन भी लोकों में प्राणी रहता है वहाँ रूढ़ियाँ नहीं थीं। इस पृथ्वी मण्डल पर रूढ़ियाँ आ गयीं। यह चाहने लगा प्राणी कि मेरी मुक्ति सहज हो जानी चाहिए। मुक्ति तो मानव के प्राण के निरोध करने से ही प्राप्त होती है, चाहे वह किसी भी रूढ़ि में अपने को ले जाना चाहता हो। परन्तु सुगन्ध को प्रत्येक प्राणी स्वीकार करता है। कोई सँसार का प्राणी ऐसी नहीं है जो सुगन्ध को अपने से दूरी कर दे। इस सुगन्ध के कर्म-काण्ड को न जानता हो। परन्तु वह सुगन्धि प्रत्येक रूढ़ियों में भी विद्यमान है।

जीवन उन्नति का मार्ग

मैं यह कहा करता हूँ कि राजा को चाहिए अपने राष्ट्र को यदि राजा ऊँचा बनाना चाहता है तो उस राजा को सबसे प्रथम अपने राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहने देनी चाहिए। क्योंकि यदि राष्ट्र में रूढ़ि रह गई तो उन रूढ़ियों के विचार सात्विक न बन करके एक राष्ट्रीयता को परणित हो करके वह एक ऐसी विकृतता बन जाती है समाज की कि वह समाज मानवीय दृष्टि से दूरी चला जाता है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय कराया कि यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं, उन रूढ़ियों को, राष्ट्र को चाहिए कि समाप्त करे। परन्तु आधुनिक काल यह जो चल रहा है, अपनी आभा में गति कर रहा है, यदि मैं राष्ट्र के क्षेत्र में जाता हूँ, मानव का सँसार में कोई अधिकार नहीं है। नाना सम्प्रदाय इस प्रकार के हैं जो नाना दलीय को अपना जन्मसिद्ध अधिकार स्वीकार करते हैं। परन्तु मैं यह कहा करता हूँ कि हे मानव! प्राणी-प्राणी का भक्षण कर रहा है। तू प्राणी-प्राणी को नष्ट करना चाहता है, तुझे कोई अधिकार है? परमात्मा ने कोई तुझे अधिकार दिया है? जैसे 'गौ' नाम का पशु है और भी नाना पशुओं को आहार, जिस उदर में सात्विक पदार्थ जाने चाहिए थे परन्तु वहाँ अपने उदर को श्मशान भूमि का क्षेत्र बना लिया है, क्या यह तेरा कोई अधिकार है? परमात्मा ने जब तुझे जन्म दिया तो तेरा पदार्थ भी उस प्रभु ने दिया। सँसार में माता की लोरियों में दुग्ध दे दिया। उसके पश्चात् पृथ्वी के गर्भ आया, नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ तुझे प्रदान कर दिये। प्राणी जो क्रिया कर रहा है, उद्गम कर रहा है, परमात्मा की सृष्टि का शोधन कर रहा है, अरे! उस प्राणी का प्राण लेने का तुझे कोई अधिकार नहीं। इसलिए आज मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ कि राष्ट्र को चाहिए, हमारे यहाँ पुरातन काल में भगवान् मनु हुए हैं, भगवान् मनु जी ने मछली से ले करके प्राणी तक की रक्षा करने के

लिए सँकल्प लिया था और वह होता रहा। परन्तु यहाँ मछली से ले करके प्राणी तक की रक्षा करना यह मानवीय क्षेत्र, एक आयत बन करके ही अपने जीवन को ऊँचा बना सकता है।

बलि का रहस्य

यहाँ बलियों का वर्णन आता है। वैदिक-साहित्य में बलियों का जो वर्णन आता है तो ऋषि-मुनि जब बलियों के ऊपर विचारने लगे तो बलियों के ऊपर विचारा गया कि किसी वस्तु को परिश्रम से ऊँचा बनाना, **परिश्रम से महान् बनाने का नाम बलि कही जाती है।** जैसे 'गो' नाम का पशु है वह बलि दे करके मानव को दुग्ध दे रहा है। अपने बछड़े का पालन कर रहा है। परन्तु वही बछड़ा कृषक ने अपने लिए धारण कर लिया। इस बलि के द्वारा कृषक अपने अन्नाद को ऊँचा बनाता है, इस पृथ्वी माता, वसुन्धरा के गर्भ से नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों को उत्पन्न कर रहा है। यही उसकी बलि है। जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की बहुत सी चर्चाएँ की हैं। परन्तु यहाँ ऐसा समाज बन गया है, किसी का आह्वान हो गया कि तुझे बलि देनी है, सबसे प्रिय वस्तु की बलि देनी है तो उससे पशुओं को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। अरे! भोले प्राणी यह तेरी बलि नहीं है। यदि तू प्रभु के आँगन में इस मन की बलि दे देगा तो तेरा कल्याण हो जाएगा। तू पशुओं की बलि देता है। तेरे द्वारा रजोगुण, तमोगुण छा जाता है तो प्रभु के राष्ट्र में तेरा कोई अधिकार नहीं। **प्रभु के राष्ट्र में प्रेरणा हृदय से प्राप्त होती है कि हे मानव! तुझे बलि देना है तो तुझे बलि अपने मन की देना है।** मन की बलि देने का ही प्राणी को अधिकार है, उसको बलि देना उसका प्रताप कहते हैं। मुझे स्मरण है बहुत से सम्प्रदाय इस प्रकार के हैं जो यह कहते हैं कि हमारे पूर्वजों को प्रभु से आह्वान हुआ। आह्वान क्या, कि तू बलि प्रदान कर। हे भक्त! भगवान् के प्रति बलि दे कर पशुओं

को नष्ट कर रहा है। जैसे तू प्रभु के राष्ट्र में है इसी प्रकार यह पशु हैं। क्या उन्हें बलि देने का तुझे कोई अधिकार भी है? यह अपने क्रिया-कर्म कर रहे हैं, तू अपना क्रियाकलाप कर रहा है, परन्तु उसको धर्मों में ला करके धर्म की प्रतिष्ठा इस समाज में नष्ट कर दी है।

इसीलिए मैं यह कहा करता हूँ, हे राजा! तुझे चाहिए कि तू नाना प्रकार की रूढ़ियों को नष्ट कर। बहुत से प्राणी इस प्रकार के इस आधुनिक जगत् में हैं, जो माँ के ऋणी है और माँ की बलि का आह्वान कर रहे हैं। अरे! भोले माँ कह करके, माँ तो सबकी रक्षा करने वाली है। माँ तो सबके हृदय को जानती है। माँ अपने पुत्रों के हृदय को जानती है। जब वह चैतन्य माँ है उसको बलि देने का तुझे कोई अधिकार नहीं है। हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! इस प्रकार का यह समाज बन गया है। इन रुढ़ियाँ को नष्ट करना चाहिए। मानव के हृदय से यह रूढ़ियाँ यदि समाप्त हो जाएँ तो यह समाज महान् बन जाए। प्रभु के राष्ट्र में बहुत से प्राणी इस प्रकार के हैं, प्रभु की आराधना करते रहते हैं परन्तु जब उनका आहार दृष्टिपात करते हैं तो दूसरों के रक्तों का पान करते हुए दृष्टिपात करते हैं तो प्रभु की भक्ति, प्रभु का चिन्तन ही क्या है? प्रभु की प्रतिभा और उसकी उपासना क्या? जब हम उसके कथनानुसार अपने जीवन को नहीं बनाते, इसी प्रकार हे मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! मैं आधुनिक काल की रूढ़ियों की कुछ विवेचना दे रहा हूँ कुछ रूढ़ियों की चर्चाएँ। परन्तु कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जो उनका खण्डन करने वाला हो। खण्डन करने वाले हैं, रसना के स्वादन करने वाले, प्रभु के भक्त भी बनना चाहते हैं, रसों का स्वादन भी चाहते हैं।

महर्षि काकभुषण्ड जी

मुझे स्मरण है मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव इससे पूर्व शब्दों में लोमश मुनि और काकभुषण्ड की चर्चा कर रहे थे। जब एक पंक्ति में विद्यमान हो करके पूज्यपाद-गुरुदेव के द्वारा नाना प्रकार की शिक्षा का अध्ययन

करते रहते तो उनका कितना विशाल तप था। आधुनिक काल का जो प्राणी है, गरुड़ जैसे ऋषि को पक्षी की संज्ञा दे रहे हैं। उसको पक्षी की संज्ञा देनी यह कागः है। मुनिवरो! काग पक्षी बन करके उड़ान उड़ता है। इस प्रकार उसको काग की उपाधि दे दी गई। परन्तु जब मैं इन वाक्यों को श्रवण करता हूँ तो यह कहता हूँ कहाँ चला गया वह साहित्य, कहाँ चला गया वह दर्शन विज्ञान जिसके ऊपर यह सदैव अध्ययन करते रहते थे? **काकभुषण्ड जी ने एक पोथी का निर्माण किया था, बहुत पुरातन काल में, त्रेता के काल में और लाखों वर्षों पूर्व निर्माण किया था।** काकभुषण्ड जी ने जिस पोथी का नाम था **चन्द्रायणनकृत** पोथी। चन्द्रमा के ऊपर वह अनुसन्धान करते थे और कहते थे कि सूर्य की किरणों से चन्द्रमा प्रकाश लेता है। चन्द्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं है। सूर्य द्यौ से प्रकाश लेता है और वही प्रकाश चन्द्रमा को कृत करता है। चन्द्रमा अपनी कलाओं से, द्वितीय कला, तृतीय कला, पूर्णिमा के दिवस वह पूर्ण हो जाता है। वह लोकों की छाया में रहता है उतनी ही किरण जाती रहती है, उतना वह बलवती होता रहता है। तो उन्होंने सार्वभौम सिद्धान्त की चर्चाएँ कीं उन्होंने एक वाक्य यह कहा कि वह जो चन्द्रमा है वह सूर्य से सहायता लेता है और उन्होंने कहा था कि शनि-मण्डल है उस शनि मण्डल में लगभग पिचासी चन्द्रमा हैं जो उसे चन्द्रित करते रहते हैं। एक रोहिणीकेतु मण्डल की उन्होंने चर्चा की, उसको लगभग बहत्तर सूर्य एक ही मण्डल को प्रकाशित करते हैं। इस प्रकार का विज्ञान महर्षि काकभुषण्ड जी ने वर्णन किया। **काकभुषण्ड जी रेणकेतु प्रह्लाण ऋषि के पुत्र थे। रेणकेतु प्रह्लाण ऋषि अंगिरस गोत्र में हुए।** एक प्रह्लाण ऋषि माता मदालसा के पुत्र थे। यह प्रह्लाण अंगिरस गोत्रीय प्रह्लाण ऋषि के पुत्र कहलाते थे। जब बाल्यकाल में माता की लोरियों में वह पनपता रहा तो माता उसे शिक्षा देती रहती थी और यह कहती रहती, हे बालक! जैसे यह काग कितना महान् अपने में विश्वसनीय कहलाता है इसी

प्रकार तुझे भी अपने को ऊँचा बनाना है। और इतना ही विश्वसनीय बनना है। क्योंकि काग जो पक्षी है जैसे वह अपने में उड़ान उड़ता रहता है इसी उड़ान के ऊपर काकभुषण्ड जी ने एक यन्त्र का निर्माण किया था, **कागाम् चथवेतु यन्त्र** यह यन्त्र उन्होंने जब काग पक्षी गति कर रहा था वायु के साथ, वायु वेग में गति कर रही है और वह वायु के समक्ष उड़ान उड़ रहा है उसी उड़ान के साथ एक यन्त्र का उन्होंने निर्माण किया। पक्षी की प्रेरणा, हृदय की प्रेरणा, दोनों का मिलान हुआ और मिलान होने से उन्होंने यन्त्र का निर्माण किया, वह उड़ान उड़ करके वायुमण्डल में गति करते रहते थे। तो ऐसे काकभुषण्ड जी थे जिनका यह जो वर्तमान का काल चल रहा है इसमें उन्हें पक्षी की संज्ञा प्रदान की जाती है। हमारे यहाँ लोमश इत्यादि ऋषिवर और काकभुषण्ड जी के जीवन में और नाना वाक्य आते रहते हैं।

महापुरुषों का जीवन

यहाँ रावण के साहित्य, उस काल के साहित्य से दृष्टिपात होता रहता है। सम्पाति को हमारे यहाँ आकृतियों की संज्ञा प्रदान की जाती है। गरुड़ जिन्होंने रावण इत्यादि से संग्राम किया उन्हें भी पक्षी की संज्ञा प्रदान की जाती है। यह क्यों की जाती है? क्योंकि वह पक्षी की भांति अपने यन्त्रों में विद्यमान हो करके अन्तरिक्ष में गति करते रहते थे, वह वैज्ञानिक थे। सम्पाति तो समुद्र के किनारे संयत रहता था और सुरषा नामक, जब सम्पाति को राजा रावण ने विजय कर लिया था तो सुरषा उनके राष्ट्र जो समुद्र के तट पर था उस राष्ट्र की वह धिराज बन करके रही। यह तो मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव परम्परा से अपनी दृष्टियों से वर्णन करते रहते हैं। आज केवल मैं तुम्हें यह उच्चारण करने आया हूँ कि हे समाज! तू अपनी आभा में आधुनिक काल के जगत् में यह रूढ़ियाँ तेरे हृदय से दूरी हो जानी चाहिएँ। क्योंकि यदि यह रूढ़ियाँ दूरी नहीं होती तो अज्ञान बना रहता है। यहाँ दूसरों की बलियों का वर्णन आता रहता

है। हमारे यहाँ प्रायः ऐसा साहित्यकारों ने कहा है क्योंकि दैत्य और देवता परम्परा से चले आ रहे हैं। आज जो सँसार में दूसरे के रक्तों को पान करने वाले हैं उनकी दैत्य सँज्ञा कहलाई जाती है और अमृतमयी जो पान करने वाले हैं, अपना आहार, अपना विचार अधिकार युक्त हो करके क्रियाकलाप करते हैं, उनकी सँज्ञा सदैव देववत् मानी जाती है। कर्म और क्रियाकलाप परम्परागतों से उनके रहे हैं। आधुनिक समाज यह कहता है माँस हमारा जन्म प्रवेः इससे हमारे शरीर का निर्माण होता है। परन्तु सँसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वह चाहे किसी भी सम्प्रदाय के हुए हैं, चाहे वह ऋषि-मुनियों की आभा में रहे हैं, शुद्ध अन्न का पान करके ही वह महत्ता को प्राप्त हुए।

मुझे स्मरण है महर्षि कणाद ने विज्ञान की आभा को जन्म दिया। महर्षि कणाद कन्द को एकत्रित करके उस अन्न को पान करते थे। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने सतपथ ब्रह्माण नाम की पोथी का निर्माण किया। इसी प्रकार जितने भी महापुरुष आधुनिक काल में हुए वह किसी भी सम्पद्राय के हुए, रूढ़ि के मानने वालों ने सम्प्रदाय की सँज्ञा प्रदान कर दी है। परन्तु वास्तव में उनका, रूढ़ियों का अभिप्राय नहीं था। जैसे हमारे यहाँ मोहम्मद के मानने वालों ने माँस का भक्षण करना प्रारम्भ कर दिया। महात्मा मोहम्मद ऐसे थे कि वह सदैव शुद्ध अन्न को पान करते थे। इसी प्रकार वैसे तो मोहम्मद की सँज्ञा कोई महात्माओं में तो गणना नहीं की जा सकती। परन्तु राष्ट्रीय आभा में उनकी गणना की जा सकती है क्योंकि उनका जितना चलाया हुआ सम्प्रदाय है वह राष्ट्र तक सीमित है, वह योग तक सीमित नहीं। क्योंकि उनमें यौगिकता नहीं है, उनका आहार और व्यवहार अशुद्ध बन गया है। इसी प्रकार ईसा के मानने वाले, उनका आहार बाल्यकाल से कितना विचित्र और कितना पवित्र रहा है जिन आहारों से वह महात्मा कहलाए, ब्रह्मवर्चोसि कहलाए। मुझे इस सँसार की बहुत सी वार्ताए

स्मरण हैं, जिस भी सम्प्रदाय में जो भी महापुरुष हुआ है सँचालक हुआ उनका आहार बहुत ही पवित्र रहा है। परन्तु उनके मानने वालों ने हिंसा करनी प्रारम्भ कर दी। उस अहिंसा का परिणाम यह हुआ कि वह एक रूढ़ि बन करके रह गई। यह राष्ट्र तक सीमित बन करके रह गई। आध्यात्मिकवाद का उसमें कोई वर्णन प्राप्त नहीं होता। क्योंकि उनका क्रियाकलाप, आध्यात्मिकवाद से दूरी है, जब एक-दूसरे में घृणा है, एक-दूसरे के लिए ईर्ष्या है, दूसरे प्राणियों को नष्ट करने की भावना बनी रहती है तो यह महापुरुषों के जो वचन हैं उनके अनुसार उनकी प्रतिभा नहीं बन पा रही।

मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव को यह वर्णन कराना चाहता हूँ कि जितने भी महापुरुष हुए हैं, सम्प्रदाय हुए हैं, **सम्प्रदाय तो मानने वालों ने बना दिए हैं।** परन्तु उनका उद्देश्य एक ही है कि अच्छाइयाँ आनी चाहिएँ, शुद्धता आनी चाहिए। जो रूढ़ि हैं वह नष्ट होनी चाहिए। यहाँ जितनी भी रूढ़ियाँ हैं वह राष्ट्र तक सीमित हैं परन्तु आध्यात्मिकवाद में तो राष्ट्र का महत्त्व ही नहीं माना गया है। हमारे यहाँ जब आध्यात्मिकवादी जनों ने यह विचारा कि राष्ट्र क्या है? तो राष्ट्र केवल धर्म की रक्षा करने के लिए है। विचारा गया कि धर्म क्या है? धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित हो रहा है। धर्म मानव के हृदय से दूरी नहीं है। जब मानव का अन्तरात्मा, जो यह पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है। इनमें जो धर्म समाया हुआ है, सुदृष्टिपात करना, सु-शब्द ग्रहण करना, सु-उच्चारण करना, प्रीति में रहना, सुगन्ध को ग्रहण करना यह पाँचों इन्द्रियों में पाँच वार्ताएँ समाहित हो रही हैं और यह जो ब्रह्माण्ड है यह पाँचों के आश्रित हो करके गति कर रहा है। इसी प्रकार मैं कोई विशेष विवेचना न देता हुआ केवल तुम्हें यह निर्णय देना चाहता हूँ, सँसार में यह जो बलि की प्रथा है यह असभ्य प्रथा है। प्रत्येक प्राणी को विचार करके कुरीतियों को त्याग देना चाहिए। यही इस मानव की

मानवता कहलाती है। यदि वह त्रुटियों को नहीं त्यागता है तो यह समाज नहीं रह सकता। महानता की प्रतिभा, ओजस्विता की आभा मानव के हृदय में सदैव परणित रहनी चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से यह कहा था कि यह सँसार कुरीतियों का जब बन जाता है तो यह केवल अज्ञानता के कारण बनता है, ज्ञान होना चाहिए। आधुनिक काल का जगत् ऐसा है जहाँ ज्ञान प्राप्त हो रहा है वहाँ जाना नहीं चाहता, क्यों नहीं जाना चाहता? क्योंकि रूढ़ियों का यह जो ज्ञान बन गया है। यदि मोहम्मद वाले अच्छी वार्ता प्रकट कर रहे हैं तो वहाँ नहीं जा पाते क्योंकि उनका कोई विषय होगा। यदि आर्यत्व कोई ज्ञान बिखेर रहे हैं वहाँ मोहम्मद के मानने वाले नहीं जाते यह ही रहा होगा क्योंकि **ज्ञान जहाँ भी प्राप्त हो जाए मानव को ले लेना चाहिए।** ज्ञान किसी भी क्षेत्र में हो, किसी भी मानव के द्वारा हो। ज्ञान और विज्ञान मानव का मौलिक गुण कहलाया जाता है। उसके ऊपर मानव को नाना प्रकार की टिप्पणियों में नहीं जाना चाहिए।

आहार और व्यवहार

मैंने अपने पूज्यपाद-गुरुदेव को यह निर्णय कराते हुए कहा है कि आहार और व्यवहार जब तक मानव का स्वच्छ नहीं बन जाएगा तब तक प्रभु के राष्ट्र में रहने का अधिकार भी नहीं। उनको वास करने का क्या अधिकार है? रहा यह कि इसमें वैज्ञानिक तथ्य क्या है? जिस समय प्राणी-प्राणी को नष्ट करता है उस समय उसकी जो आह है, उसकी जो दाह है वह किसी प्रकार विकृत होती है? अरे मानव तू उसको पान करता है तेरे ही शरीर में रक्त की उसी प्रकार की विकृतता का जन्म हो जायेगा। यह वैज्ञानिक सिद्धान्त है। वैज्ञानिकजनों ने बहुत पुरातन काल में यह सार्वभौम सिद्धान्त की वार्ताएँ प्रकट की हैं। धर्म और मर्यादा मानव के समीप उस काल में रह सकती है जब मानव की बुद्धि में शुद्धता होगी, उसकी बुद्धि में महत्ता होगी, आहार और व्यवहार में पवित्रता होगी। उसी

काल में वह पवित्र रहेगा ''आहार ब्रहे सम्भवा देवश्चयाम्'' जब मैं इन वाक्यों को कहता हूँ तो समाज तो यह कहता है कि यह महानन्द कैसी अशुद्ध वार्ता प्रकट कर रहा है? आधुनिक काल जब यह कहता है तो मुझे आनन्द और मग्नता आती है कि यह समाज किस रूढ़ियों में परणित हो करके अपने को समाप्त कर रहा है। वह आत्मा सर्वत्र है। वह चेतना माता वसुन्धरा जो मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव वर्णन करते हैं माता के गर्भ में किसी भी रूढ़ियों में माता नहीं रहती। रूढ़ियों में चैतन्य नहीं है। चेतना तो एक रस रहने वाली है। ज्ञान भी एक रस रहने वाला है। इन्द्रियों का विषय भी एक रस रहने वाला है।

संकीर्णता

मानव के जीवन में जो विभक्त शक्ति प्रधान हो गई है वह संकीर्णता की अग्नि है सम्प्रदायों को ले करके इस अग्नि का प्रसार हो रहा है, यह कितना एक मानव के विनाश का क्षेत्र बन रहा है। मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद-गुरुदेव से कहा था यह घृणा का क्षेत्र जो इस प्रकार का आधुनिक काल में बनता चला जा रहा है यह बहुत निकट समय आ रहा है जब यहाँ रक्तभरी क्रान्ति के अवशेषों का जन्म होता जा रहा है और वह रक्तभरी क्रान्ति मानव समाज में परणित हो जायेगी।

यज्ञमान को आशीर्वाद

पूज्यपाद-गुरुदेव से अब मैं आज्ञा पाऊँगा क्योंकि इतना ही समय मुझे पर्याप्त है। आज मैंने कुछ अपने विचार व्यक्त किये हैं पूज्यपाद-गुरुदेव की आज्ञा से। मैं यजमान के लिए जहाँ याग हो रहा है वह उस याग को दृष्टिपात करके मेरा अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरा समय-समय पर द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, दुरुपयोग की कामना न

जागे। सदैव यही मेरी कामना रहती है। इसके साथ मैं अपने वाक्यों को विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने कुछ विचार व्यक्त किए हैं। उनके विचारों में समाज के प्रति एक दाह रहती है, एक विडम्बना बनी रहती है। यह विडम्बना प्रभु सदैव सम्भवः स्वेः पूर्णता को प्राप्त करते रहते हैं। समय-समय पर अपनी आभा को जन्म देते रहते हैं। आज मैं भी जैसा महानन्द जी ने कहा है यजमान! तेरे जीवन की आभा सदैव महान् और पवित्र बनी रहे। इसके साथ यह वाक्य समाप्त होने जा रहा है।

आजका विचार हमारा क्या कि यह जो अग्नि है यह विचारों का, परमाणुओं का आदान-प्रदान करती रहती है। इसमें प्राण शक्ति गति करती रहती है। यह अग्नि ही सूक्ष्म रूप बना करके एक ब्रह्माण्ड का निर्माण करती रहती है। गृहों में जो परमाणुवाद स्वच्छ रूपों में गति करते हैं तो गृह उससे महान् और पवित्र बनते हैं। यह आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 2 मार्च, 1983
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : चौ. गिरीराज सिंह,
विक्रम सिंह,
ग्राम खतौला, मुजफ्फरनगर

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. मानव जैसा भी इस प्रकृति के आवेशों में आ करके अपने विचार और संस्कार बना लेता है उसके अनुकूल उसके आवागमन की प्रतिभा बन जाती है।
2. संस्कार माता के प्रबल होते हैं।
3. मानव का जैसा एक लोक का कर्म होता है उसी प्रकार ये योनियाँ प्राप्त होती है और लोक प्राप्त होते हैं।
4. ब्रह्मरन्ध्र के द्वार से जाने वाला आत्मा सूर्य लोक में दस दिवस तक रमण करता हुआ उसके पश्चात् वह आरुणि मण्डल में रमण करता है। ध्रुव लोक में दस दिवस तक रमण करता है। वह ऊँचे लोको में रमण करता है।
5. मानव का आत्मा जाने के समय जो मानव का अन्त विचार होता है उसी प्रकार के विचारों के साथ में यह आत्मा का आवागमन, इसकी धाराएँ प्राप्त होती रहती हैं।
6. ऋत कहते हैं प्रकृति के विज्ञान को।
7. यज्ञ कहते हैं विचार को, यज्ञ कहते हैं सुगन्धि को।
8. ऋषि मुनियों के आशीर्वाद से जीवन प्रतिभा चली आ रही है।
9. जो मानव के हृदय से भावनाएँ और तरङ्गे उत्पन्न होती हैं हमारे यहाँ उसे उद्‌गम् कहते हैं। इसी को उद्‌गीत कहा जाता है।
10. दो वस्तुएँ हैं दोनों का मिलान करने का नाम ही उद्‌गीत कहा जाता है।
11. जब राष्ट्र में, छात्रबल में अज्ञानता, क्रान्ति आने लगती है तो छात्रबल राष्ट्र का विनाश करती है।

दान

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है–

श्री कालूराम त्यागी, मुजफ्फरनगर	2100	रुपये
श्री मामचन्द जी	1100	रुपये
श्री विपिन भारद्वाज, गुडगाँव	1100	रुपये
श्री सुबेसिंह चिरोडी, मेरठ	100	रुपये
श्री भगीरथ शर्मा, दाहा	500	रुपये
श्री ब्रह्म सिंह, काकडा, मुजफ्फरनगर	50	रुपये
श्री श्रीभगवान त्यागी, वजीलपुर, हापुड़	101	रुपये
श्री राजवीर गौतम, काकडा, मुजफ्फरनगर	500	रुपये
श्री समरपाल सैनी, काकडा, मुजफ्फरनगर	500	रुपये
श्री राकेश सैनी, काकडा, मुजफ्फरनगर	1000	रुपये
श्री हरिद्वारी लाल कश्यप, कासिमपुर खेडी	502	रुपये
श्री गमदूरसिंह, फफूंदा, मेरठ	100	रुपये
श्री प्रताप सिंह, फफूंदा, मेरठ	100	रुपये
श्री कमल सिंह, मोदीनगर	101	रुपये
श्री यादराम, ग्राम भामौरी, मेरठ	100	रुपये
श्री कालूराम, ग्राम दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर	500	रुपये
श्री सीताराम पंवार, शामली	100	रुपये
श्री धर्मवीर सैनी, काकडा, मुजफ्फरनगर	250	रुपये
श्री राजपाल वानप्रस्थी, भामौरी, मेरठ	100	रुपये
डॉ. वीरसैन सैनी, काकडा, मुजफ्फरनगर	51	रुपये
डॉ. शिवकुमार, शाहपुर	200	रुपये
श्री हरपाल सिंह, सौरम	200	रुपये
श्री देवशरण त्यागी, ग्राम दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर	1000	रुपये
श्री एच.एस. चौधरी, अशोक विहार, नई दिल्ली	1100	रुपये
श्री विष्णु शर्मा, जयमाता मार्किट, त्रिनगर, दिल्ली	2100	रुपये
श्री जगन्नाथ त्यागी, अतराडा, मेरठ	100	रुपये

श्री कृष्ण कुमार, ग्राम मंडौला, गाजियाबाद	101 रुपये
श्री भारत कुमार आर्य, सुराना, गाजियाबाद	501 रुपये
मास्टर जय भगवान, ग्राम कल्याणपुर, मेरठ	100 रुपये
श्री यादराम सुपुत्र श्री बलजीत, सरघना, मेरठ	101 रुपये
श्री राजपाल वानप्रस्थी, भामौरी, सरघना, मेरठ	1000 रुपये
श्री योगेन्द्र सिंह, 157-हरी एन्क्लेव बुलन्दशहर, उ.प्र.	1100 रुपये
श्री पवन कुमार, खरखौदा, उ.प्र.	1000 रुपये
श्री बंटी, संधान, बवाना, मेरठ	500 रुपये
श्री अचमन, मवाना	100 रुपये
कु. नव्या चौधरी, मीरपुर, मेरठ	100 रुपये
श्री जगदीश प्रसाद प्रजापति, मीरपुर, मेरठ	100 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

सोमवार 10 अक्टूबर, 2016 से 16 अक्टूबर, 2016 तक

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवं पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से आचार्य अरविन्द शास्त्री जी के ब्रह्मतत्त्व में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन कबीर आश्रम भूपतवाला हरिद्वार (वैदिक मोहन आश्रम से 200 मीटर दूर सूखी नदी के पास) में आयोजित किया जा रहा है। आप अपने परिवार व अपने इष्ट सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पधारकर यज्ञाहुति प्रदान कर एवं तन, मन, धन का सहयोग देकर, पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं आयोजक : आचार्य अरविन्द शास्त्री, गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत

॥ ओ३म् ॥

कार्यकारिणी का चयन

समिति की आम सभा की बैठक में दिनाँक 11 सितम्बर, 2016 को सर्वसम्मति से निम्न कार्यकारिणी का गठन आगामी पाँच वर्षों के लिए किया गया–

1. प्रधान	–	श्री रवि प्रकाश गुप्ता
2. उप-प्रधान	–	श्री ब्रजगोपाल खोसला
3. कोषाध्यक्ष	–	सु. कु. नीरू अबरोल
4. प्रकाशन मन्त्री	–	श्री मधुसूदनेश्वर प्रकाश
5. मन्त्री	–	श्री सुशील त्यागी
6. उप-मन्त्री	–	श्रीमति रविला गुप्ता
7. प्रचार मन्त्री	–	चौधरी जितेन्द्र चिकारा

कार्यकारिणी के सदस्य

1. चौधरी नरेन्द्र चिकारा
2. श्रीमति नीलम भाटिया
3. श्री रामनिवास त्यागी
4. श्री कर्ण तुली
5. श्री कपिल शर्मा
6. श्री लोमश त्यागी
7. श्री सूर्य देव

मन्त्री

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः—

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला—बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110—मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

॥ ओ३म् ॥

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

रविवार 6 नवम्बर, 2016 से 13 नवम्बर, 2016 तक

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवं पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से आचार्य गुरुवचन शास्त्री जी के ब्रह्मतत्त्व में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन ग्राम सिसोली, गढ़ रोड मेरठ (उत्तर प्रदेश) में आयोजित किया जा रहा है। आप अपने परिवार व अपने इष्ट सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पधारकर यज्ञाहुति प्रदान कर एवं तन, मन, धन का सहयोग देकर, पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के ब्रह्मा : आचार्य गुरुवचन शास्त्री, गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत

आयोजक एवम् निवेदक
समस्त क्षेत्रवासी ग्राम सिसोली, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

7वां चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

सोमवार 17 अक्टूबर, 2016 से 23 अक्टूबर, 2016 तक

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवं पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से गुरुकुल लाक्षागृह, बागपत के तत्वावधान में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी **श्री शिव मन्दिर ग्राम दान्दुपुर निकट फलावदा, मेरठ** के प्रांगण में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ अत्यन्त हर्ष के साथ आयोजित किया जा रहा है। आप परिवार के इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पधारकर यज्ञाहुति प्रदान कर एवं तन, मन, धन का सहयोग देकर, पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के ब्रह्मा : आचार्य गुरुवचन शास्त्री, गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत
आचार्य–योगाचार्य अरविन्द शास्त्री, गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत

अयोजक एवं निवेदक
समस्त ग्रामवासी ग्राम दान्दुपुर निकट फलावदा, मेरठ

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' के रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रभु! हम चाहते क्या है? हमारी कामना क्या है? हमारी एक ही तो कामना है कि हमारा हृदय स्वच्छ बन जाए। हमारे हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो जाए। हम सत्य को स्वीकार करने लगें। सत्य क्या है? सत्य वह कहलाता है जो प्रभु का दिग्दर्शन है, सत्य मानवीय दर्शन है। मानवीय दर्शन क्या है? अपने में ही अपनेपन का दर्शन करना, वह मानवीय दर्शन कहलाता है।

इसीलिए हे प्रभु! मैं श्रद्धा के क्षेत्र में जाना चाहता हूँ। क्योंकि श्रद्धा हृदय में रहती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव